उत्तर प्रदेश के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयो मे अध्ययनरत विद्यार्थियो के अध्ययन आदतो का तुलनात्मक अध्ययन

सविता यादव[1]; डॉ. सुशील कुमार गुप्ता[2]

[1]शोधछात्रा – राजा श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर उत्तर प्रदेश, भारत

[2]शोध निर्देशक – असिस्टेंट प्रोफंसर शिक्षा संकाय राजा श्री कृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर उत्तरप्रदेश, भारत

Corresponding Author Email: Sykorba@gmail.com

सांराश—मनुष्य सामाज में रहता है वह समाज मे रह कर जिस प्रकार का व्यवहार दुसरे के साथ करता है वह व्यवहार ही उसकी आदत कहलाती है. प्रत्येक बालक मे कई प्रकार की आदते होती है जो की स्वभाविक तथा व्यक्तिगत होती है। एक विद्यार्थीयो में अच्छी आदतो मे निर्माण करने मे उसके विद्यालय की महत्तवपूर्ण भुमिका होती है एक उचित और उत्तम विद्यालयी वातावरण बालको मे अच्छी अध्ययन आदतो को निर्माण करता है जो बालको के भविष्य निर्माण मे एक अहम भूमिका निभाती है । जिसकी सहायता से मनुष्य का चहुमुखी विकास होता है माना जाता है कि शिक्षा कि सहायता से बालक का संम्पुर्ण विकास होता है अर्थात बालक के संम्पुर्ण विकास कि का उत्तरदायित्तव शिक्षक का होता है इस लिए एक शिक्षक में सम्पुर्ण शिक्षण कौशल का होना अति आवश्यक होता है एक शिक्षक की जिम्मेदारी होती है कि वह बालक को अध्ययन हेतू प्रेरित करे और सही मार्गदेर्शन के द्वारा बालक मे अध्ययन के लिए आदत उत्पन्न करे, जिससे बालक मे उचित अध्ययन आदतो का निर्माण हो अगर बालक मे उचित अध्ययन आदत का निर्माण हो जाता है तो बालक जीवन मे बहुत आगे जाता है। इस शोध अध्ययन के लिए शोधकर्ता के द्वारा 1000 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो को न्यायदर्श के लिए चश्न किया गया है।

I. प्रस्तावना

शिक्षा माता के समान पालन पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्गदर्शन द्वारा अपने कार्यो मे लगी रहती है, शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारो ओर फैलता है, तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओ को सुलझाने मे हमारी सहायता करती है, यह हमारे संसारिक चिन्ताओ को दुर करके प्रसन्नता प्रदान करती है जीवन को सुंदरव सुसंस्कृत बनाती है।

जिस प्रकार सुर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल जाता है, तथा सूर्य अस्त होने पर कुरहला जाता है , ठीक उसी प्रकाश शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भांति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर दरिद्रता शोक एवं कष्ट के अंधकार में डूबा रहता है।

अर्थात शिक्षा वह प्रकाश है, जिसके द्वारा बालक की समस्त शक्तियो का (शारीरिक, मानसिक बौद्विक, नैतिक तथा आध्यत्मिक शक्तियॉ) उसके सर्वागिण उन्नति में सहायता होती है। और वह अपने जीवन के सम्पूर्ण लक्ष्य की प्रात्ति वह आसानी से कर सकता है।

जन्म होने के साथ व्यक्ति अपनें वातावरण से कुछ न कुछ सीखता शुरू कर देता है। बालक के द्वारा सीखने वाली क्रिया जो बालक के द्वारा बार–बार दोहराई जाती है वह कार्य हि बालक मे स्थाई आचरण का रूप धारण कर लेता है। इस स्थाई आचरण को ही आदत कहते है।

शिक्षा का मुख्य लक्ष्य किसी भी व्यक्ति का शिक्षा द्वारा पूर्ण रूप से विकास(शारीरिक, मानसिक, बौद्विक, नैतिक) करना है। इसे निर्माण करने के लिए शिक्षक का प्रमुख योगदान रहता है। क्योकि नियमित रूप से दोहराने वाली क्रिया आदत का रूप ले लेती है। और शिक्षक विद्यार्थियो को बार बार किसी विषय वस्तु को दोहराने के लिए कहता है या रटने के लिए कहता है, और इस प्रकार बार बार पढना या दोहराना अध्ययन करना बालक कि आदत बन जाती है।

हांलिग वर्श (1959) के अनुसार –:

प्राय; सभी शैक्षिक क्रियाकलापो मे मुख्य छ; कारको का हाथ रहता है – उद्देश्य, अध्यापक, शिक्षण विधियॉ, बालक के विद्यालयेत्तर पाठयक्रम। इन कारको के व्यक्तिगत व सामुहिक दोनो प्रकार का अध्ययन ही शिक्षा शास्त्र है।

फ्रोबेल के अनुसार –:

''शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालक अपनी जन्मजात शक्तियों को अभिव्यक्त करता है।''

II. आदत – (भ्ंइपज)

आदत को अंग्रेजी में (भ्इपज) कहते है । अर्थात बार बार करना, आदत का अर्थ – जो भी काम करना हमारे लिए कठिन होती है, उसी कार्य को सीखने या बार–बार दोहराने के बाद वही कार्य करना हमें सरल लगता है। और कालान्तर में बिना सोचे समझे हुए हम उस कार्य को ठीक उसी प्रकार करने लगते है। इसी कार्य करने के तरिके को ही आदत कहते है। इस प्रकार आदत बार–बार दोहराया गया व्यवहार होता है जो स्वयं ही होता है। दुसरे शब्दो मे नियमित रूप से बार–बार दोहराने वाली क्रिया जो बाद में स्वयं ही क्रियान्वित होने लगती है आदत कहलाती है। उस कार्य को करने के लिए व्यक्ति को दिमाग लगाने कि आवश्यकता ही होती है।

जेम्स के अनुसार –:

"आदत व्यक्ति का दूसरा स्वभाव होता है।" जो व्यक्ति प्रदर्शित करता है उसे ही आदत कहते है।"

कार्टन वी.गुड के अनुसार–:

"आदत कार्य, गति, व्यवहारो के प्रतिरूप के अभ्यास तथा प्रशिक्षण से सरल होती है, यह परिचित हो जाती है और उसमें तीव्रता आ जाती है। ये चेतन विचार के अभाव में भी कार्यजन्य होती है, न तो इसमें झिझक होती है और न ही एकाग्रता होती है।"

मार्गन एवं गिलिलैण्ड के अनुसार–:

"आदत वह अर्जित अनुभव है जो व्यवहार मे परिवर्तन से आता है। अधिगम की प्राप्ति से स्वभाविक से स्वभाविक रूप परिवर्तन आते है।"

III. अध्ययन आदत

1. शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

IV. शोध परिकल्पनायें

Ho_1 शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नही होता है।

Ho_2 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के अध्ययन आदत सार्थक अंतर नहीं होता है।

Ho_3 माध्यमिक स्तर के विद्यालय में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदत सार्थक अंतर नहीं होता है।

IV.I. न्यायदर्श :–

1. इस अध्ययन मे उत्तर प्रदेश राज्य के जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयो को सम्मिलित किया गया है।
2. 1000 छात्र व छात्राओ को न्यायदर्श के रूप मे चयन किया गया है। (500 छात्र और 500 छात्राओ का)

IV.II. आंकडो के संकलन की विधि

'शोधकर्ता के द्वारा इस शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु यादृच्छिक न्यायदर्श विधि का प्रयोग कर के इस शोध कार्य को पुर्ण किया गया है।

IV.III. संख्यिकीय तकनीक

शोधकर्ता ने इस शोध अध्ययन के कार्यो को करने के लिए क्रमशः पहले मध्यमान,(M) ज्ञात किया उसके बाद प्रमाणिक विचलन,(SD) ज्ञात किया और अंत मे टी रेशां (T) ज्ञात कर के इस शोंध अध्ययन को पुर्ण किया

IV.IV. शोध उपकरण

शोधकर्ता ने इस शोध अध्ययन मे अध्ययन आदत के उपकरण के रूप मे इस अध्ययन आदत मापनी का उपयोग किया है जो कि एम.एन. पालसेन तथा अनुराधा शर्मा द्वारा निर्मित है इनके द्वारा उपकरण का प्रयोग कर के इस शोध कार्य के लिए डाटा का संग्रहण किया है।

परिकल्पना संख्या – 01

Ho_1 शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत का परीक्षण।

क्र.	समूह	N	M	SD	T	DF	परिणाम
01	शासकीय	500	40.87	3.26	3.71	998	अस्वीकृत
02	अशासकीय	500	40.12	3.22			

सारणीय संख्या 1.1 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के अध्ययन आदत का परीक्षण करने पर। शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के अध्ययन आदत का मध्यमान क्रमशः (ड) 40.87 और 40.12 प्राप्त हुआ तथा प्रमाणिक वियलन क्रमशः ँ(क) 3.26 और 3.22 प्राप्त हुआ है। इन दोनो मानो में अंतर सार्थक या असार्थक है यह जानने के लिए अनुपातो कि गणना कि जाएगी जिसका प्राप्त मान (ज) 3.71 है, जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.96 से अधिक प्राप्त हुआ है। इस लिए यह परिकल्पना अस्वीकृत हो अस्वीकृत हो जाएगी।

अतः निष्कर्ष में कह सकते है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्याार्थियों के अध्ययन आदत में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है। अर्थात शून्य परिकल्पना के सार्थकता स्तर 0.05 पर यह परिकल्पना अस्वीकृत किया जाएगा ।

परिकल्पना संख्या – 02

Ho_2 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर विद्यालय मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के अध्ययन आदत का परीक्षण।

क्र.	समूह	N	M	SD	T	DF	परिणाम
01	शहरी	500	40.69	3.12	3.65	998	अस्वीकृत
02	ग्रामीण	500	39.91	3.26			

सारणीय संख्या 2.1 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो अध्ययन आदत का परीक्षण करने पर। शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के अध्ययन आदत का मध्यमान क्रमशः (ड) 40.69 और 39.91 प्राप्त हुआ तथा प्रमाणिक वियलन क्रमशः ँ(क) 3.12 और 3.26 प्राप्त हुआ है। इन दोनो मानो में अंतर सार्थक या असार्थक है यह जानने के लिए अनुपातो कि गणना कि जाएगी जिसका प्राप्त मान (ज) 3.65 है, जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.96 से अधिक प्राप्त हुआ है। इस लिए यह परिकल्पना अस्वीकृत हो जाएगी।

अतः निष्कर्ष में कह सकते है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में कोई सार्थक अंतर नही है। अर्थात शून्य परिकल्पना के सार्थकता स्तर 0.05 पर यह परिकल्पना अस्वीकृत किया गया है।

परिकल्पना संख्या – 03

Ho_3 माध्यमिक स्तर के विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदत का परीक्षण।

क्र.	समूह	N	M	SD	T	DF	परिणाम
01	छात्र	500	40.62	3.26	1.30	998	स्वीकृत
02	छात्राए	500	40.37	3.11			

सारणीय संख्या 1.1 के निरीक्षण से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के अध्ययन आदत का परीक्षण करने पर। शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के अध्ययन आदत का मध्यमान क्रमश (ड) 40.62 और 40.37 तथा प्रमाणिक वियलन क्रमश ँक) 3.26 और 3.11 प्राप्त हुआ है। इन दोनो मानो में अंतर सार्थक या असार्थक है यह जानने के लिए अनुपातो कि गणना कि जाएगी जिसका प्राप्त मान (ज) 1.30 है, जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.96 से कम प्राप्त हुआ है। इस लिए यह परिकल्पना स्वीकृत हो जाएगी।

अतः निष्कर्ष में कह सकते है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में कोई सार्थक अंतर नही है। अर्थात शून्य परिकल्पना के सार्थकता स्तर 0.05 पर यह स्वीकृत किया गया।

V. निष्कर्ष

01. अतः निष्कर्ष में कह सकते है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर पाया गया है। अर्थात शून्य परिकल्पना के सार्थकता स्तर 0.05 पर यह अस्वीकृत किया गया है।

02. अतः निष्कर्ष में कह सकते है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में सार्थक अंतर पाया गया है। अर्थात शून्य परिकल्पना के सार्थकता स्तर 0.05 पर यह अस्वीकृत किया गया है।

03. अतः निष्कर्ष में कह सकते है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में कोई सार्थक अंतर नही है। अर्थात शून्य परिकल्पना के सार्थकता स्तर 0.05 पर यह स्वीकृत किया गया है।

VI. सुझाव

1. विद्यार्थियों को प्रतिदिन अध्ययन करनी चाहिए।
2. विद्यार्थियों को प्रतिदिन गृहकार्य करना चाहिए।
3. विद्यार्थियों को अपने अध्ययन अभ्यास करने के स्थान को साफ–सुथरा रखना चाहिए।
4. विद्यार्थियों को अपने अध्ययन करने के स्थान पर ऐसी कोई भी वस्तु नही रखनी चाहिए जिससे ध्यान विचलित हो जाए।
5. विद्यार्थियों को अध्ययन करते समय सकारात्मक सोच के साथ अध्ययन करना चाहिए।
6. विद्यार्थियों को पढ़ने के साथ–साथ अन्य बाहरी प्रवृत्तियों में भी रूचि लेनी चाहिए।
7. विद्यार्थियों को प्रतिदिन व्यायाम के साथ–साथ समय पर सोना व अच्छा खाना समय पर लेना चाहिए।
8. विद्यार्थियों को अध्ययन करते समय चिन्ता मुक्त रहना

विद्यार्थियों में उचित अध्ययन आदत का होना अति आवश्यक है, अगर बालक में अच्छी अध्ययन आदत होगी तो वर उच्च सफलता छात्र को परीक्षा के रूप में नेतृत्व की स्थिति प्रदान करती है।

किसी भी विद्यार्थी के चाहे व शहरी हो या ग्रामीण या फिर शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत हो या अशासकीय विद्यालय में, इन सबका तुलना करने पर कोई विशेष अंतर नजर नहीं आता है। क्योंकि अध्ययन आदत ओर अध्ययन रूचि का प्रत्येक विद्यार्थी का अपना एक स्वभाव होता है जिसके कारण वह अपने सर्वांगीण विकास के मार्ग की अग्रसर होते रहता है और यह विकास सभी के लिए आवश्यक है।

उचित व अच्छी अध्ययन आदत व्यक्ति का स्वयं के बारे में तथा उपने व्यवहार के बारे में एक ऐसा दृष्टिकोण व अवधारणा होती है जो परिवेश के प्रति उसके प्रत्यक्षीकरण एवं व्यवहार के प्रभाव को प्रभावित करती है। परिपक्वता बौद्धिक योग्यताएं सीखने के अवसर, अनुभव, लिंग, आयु, सूचना, प्रतिपूर्ति, सामाजिक वातावरण आदि आत्म प्रत्यय को प्रभावित करते है।

अध्ययन आदत मापनी जिससे छात्राओं की शिक्षकों के पति दृष्टिकोण, गृह वातावरण, शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, अध्ययन आदत, मानसिक द्वंद्व, एकाग्रता, गृह समनुदेशन, आत्मविश्वास व परीक्षा आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्मित किया गया है।

शोधकर्ता ने जौनपुर जिले के ग्रामिण और शहरी क्षेंत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों कर उन विद्यालयों के छात्र और छात्राओ के अध्ययन आदत के कुछ क्षेत्रो मे सार्थक अन्तर पाया गया है और कुछ क्षेत्रो मे कोई सार्थक अन्तर नही है

संदर्भित ग्रंथ सूची

1. आस्थाना डॉ विपिन एवं आस्थाना स्वेता (1999) – मनोविज्ञान और शिक्षा मे मापन एवं मूल्यांकन।विनोद पुस्तक मंदिर आगरा(423, 439, 201, 210)

2. लाल एवं जोशी – "शिक्षा मनोविज्ञान " आगरा 7 अग्रवाल पब्लिकेशन

   2007–08 पृष्ट संख्या 30–34 ।

3. भटनागर, सुरेश – शिक्षा मनोविज्ञान , मेरठ लायर बुक डिपो।
4. भटनागर चांद तथा राय पारसनाथ(1977)–" अनुसंधान का परिचय एल. एन. अग्रवाल पब्लिशर्स आगरा।"
5. ढौडियाल, सच्चिदानन्द व पाठक, अरविन्द –शैक्षिक अनुसंधान, विधिशास्त्र राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
6. डॉ एस. के. मंगल एवं श्रीमति मंगल शुभ्रा –" विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रकिया, लाल, बुक डिपो मेरठ।